सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

● विवेक दुबे 'निश्चल'

सृजक-सृजन-समीक्षा

विवेक दुबे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

विवेक दुबे का परिचय

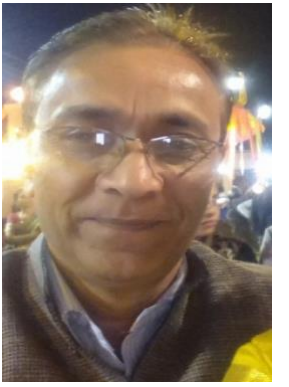

नाम - विवेक दुबे "निश्चल"

पत्नी- राधा दुबे

पिता-श्री बद्री प्रसाद दुबे"नेहदूत"

माता- स्व.श्रीमती मनोरमा देवी

शिक्षा - स्नातकोत्तर

पेशा - दवा व्यवसाय

निवासी- रायसेन (मध्य प्रदेश)

मोबाइल-- 07694060144

सम्मान एवं उपलब्धियां--

निर्दलीय प्रकाशन भोपाल द्वारा वर्ष 2012 में **"युवा सृजन धर्मिता अलंकरण"** से अलंकृत।

जन चेतना साहित्यिक सांस्कृतिक समिति पीलीभीत द्वारा 2017 से **श्रेष्ठ रचनाकार** से सम्मानित ।

वागेश्वरी-पुंज सम्मान से सम्मानित ।

कव्य रंगोली त्रैमासिक पत्रिका लखीमपुर खीरी द्वारा **साहित्य भूषण** सम्मान 2017 से सम्मानित ।

अपना ब्लॉग लिखता हूँ ।

"**निश्चल मन"** नाम से

vivekdubyji.blogspot.com

काव्य रंगोली ,अनुगूंज , कस्तूरी कंचन साहित्य पत्रिका एवं निर्दलीय साप्ताहिक

पत्र में रचनाओं का प्रकाशन।

हिंदी साहित्य पीडिया , कागज़ दिल, मेरे अल्फ़ाज़ , मृत भाषा.कॉम
वेब साइट्स पर रचनाओं का निरन्तर प्रकाशन ।

आत्मकथ्य

कवि पिता श्री बद्री प्रसाद दुबे "नेहदूत" से
प्रेरणा पा कर कलम थामी।
साहित्यिक परिदृश्य का असर एवं साहित्यकार पिता का अंश , सींचता रहा मन को वृक्ष का रूप लेता राह ।
खून रंग दिखाता है इस बात को सही साबित करता रहा ।
भोपाल से जुड़े होने की बजह से उर्दू ज़ुबान आम बोल चाल में मिली जो रचनाओं में भी इस्तेमाल करने में कोई हिचकिचाहट नही होती ।
सहजता हूँ कुछ घटनाओं को, कुछ पूरी कुछ अधूरी इच्छाओं को ।
देखता जो यहाँ वहाँ कर देता शब्दों की छाँव।
कभी कभी कुछ न कह पाने की कसक , शब्द बन कागज पर उतर जाती है ।
दवा व्यवसाय के साथ मिलते वक़्त को शब्दों में खर्च करता हूँ ।
बेसे शब्द भंडार की कमी है पास मेरे, कम शब्दों से ही काम चलता हूँ ।
सरल सहज आम बोल चाल के शब्दों का ही प्रयोग , बस प्रयास अपनी बात दिल से कहकर दिल तक पहुंचाने की।अक्सर व्यकरण की गलतियाँ भी करता हूँ, जिन्हें कुछ अजीज सुधारते है ।बात कहता हूँ निश्चल सरल सी ।त्वरित विचार आए तुरन्त लिख डाले ।सोचकर लिखने का समय नही मिला कभी, जो शायद अब आदत बन गई।आत्मकथ्य भी लिख रहा हूँ समीक्षार्थ बस यूँ ही ।छोटे से शहर के छोटे से इंसान की तरह ।

विवेक दुबे "निश्चल"

सृजक का सृजन

माँ

ममता जब जब जागी थी ।
माता की टपकी छाती थी ।
दे शीतल छांया आँचल की ,
माता सारी रात जागी थी ।

देख अपलक निगाहों से ,
गंगा यमुना अबतारी थी ।
स्तब्ध श्वास थी साँसों में ,
अपनी श्वासों से हरी थी ।

आँचल की वो छाँव घनी थी।
दुनियाँ में पहचान मिली थी ।
छुप जाता तब तब उस आँचल में,
जब जब दुनियाँ अंजान लगी थी।

उस आँचल की छोटी सी परिधि से ,
इस दुनियाँ की परिधि बड़ी नही थी।
हो जाता "निश्चल" निश्चिन्त सुरक्षित ।
उस ममता के आँचल में चैन बड़ी थी।

उस माता के आँचल में ....

पिता

मनचाहा बरदान मांग लो ।
अनचाहा अभय दान माँग लो ।।

होंठो की मुस्कान माँग लो ।
जीवन का संग्राम माँग लो ।।

सारा पौरुष श्रृंगार माँग लो ।
साँसों से तुम प्राण माँग लो ।।

बस हँसते हँसते हाँ ।
कभी न निकले ना ।।

कुछ ऐसा होता है पिता ।
क्या हम हो सकेंगे कभी ?

इस ईस्वर के आस पास कहीं ...
शायद तब समझ सकें हम भी ।

क्या होता है पिता ?

चेहरे

चेहरे ही बयां करते है,
इंसान के हुनर को ।
नजरें ही पढ़ा करतीं हैं ,
हर एक नज़र को ।

क्यों इल्ज़ाम फिर लगाएँ ,
इस मासूम से ज़िगर को ।
दिल झेलता है फिर भी,
दर्द के हर कहर को ।

चेहरे ही बयां करते हैं ,
इंसान के हुनर को ।
शब्दों ही ,ने उलझाया ,
शब्दों के असर को ।

मिलें सब जिस नज़र में ,
कहाँ ढूंढे उस नज़र को ।
मासूमियत ने देखो ,
किया ख़त्म , हर असर को।

चेहरे ही बयां करते हैं ,
इंसान के हुनर को ।

एकाकी इस जीवन मे

नींद नही आती अब ,पलकों पे रात बिताने को ।
रोतीं रातें क्यों अब ,शबनम के अहसासों को ।
भूल गई क्यों अब,अलसाए इन भुनसारों को ।
खोज रहा अंबर अब ,तिमिर सँग चलते तारों को ।
नींद नही आती अब,पलकों पे रात बिताने को ।

भूल रहे क्यों अब,अपने ही अपने वादों को ।
रुके कदम क्यों अब,पाते ही मुश्किल राहों को ।
एक अकेला चल न पाएगा ,बीच राह में थक जाएगा ।
कैसे अपनी मंजिल पाएगा ।आ जा तू साथ बिताने को ।
नींद नही आती अब ,पलकों पे रात बिताने को ।

छोड़ राह मुड़, तू जाना ।आधी राह चले , तू आना ।
कुछ दूर चले भले कोई ,जा फिर , वापस आने को ।
राहों से बे-ख़बर नही मैं ,एकाकी इस जीवन में ,
साथ चले बस मेरे कोई ।मंजिल तो एक बहाने को ।
नींद नही आती अब,पलकों पे रात बिताने को

ख़्वाबों की खातिर

सोया हूँ ख़्वाबों की ख़ातिर , मुझे नींद से न जगाना तुम।
आना हो जो मुझसे मिलने , ख़्वाबों में आ जाना तुम ।
यह दुनियाँ ,नही हक़ीक़त ।
यह दुनियां एक फ़साना है ।
ठहरा नही यहाँ कभी कोई,
यहाँ तो आना और जाना है ।
ख़्वाबों की दुनियाँ ही , सच्ची झूठी है ।
यह दुनियां तो , झूठी सी सच्ची है ।
ख़्वाबों में असल तसल्ली होती है ।
दुनियां में ,तल्ख़ तसल्ली होती है ।
ख़्वाबों में ही , हँस रो लेते हम।
ख़्वाबों में हर बात बयां होती है ।
इस दुनियां में तो , उसकी मर्ज़ी है ।
रोने हँसने की,उसकी ख़ुदगर्ज़ी है।
यहाँ रोते हैं , उसकी मर्ज़ी से ,
हँसने में भी, उसकी ख़ुदगर्ज़ी है ।
जी न सकें जो ,यहाँ जी ते जी,
मर कर वो, यहाँ ज़िंदा रहते हैं।
इस जी ते जी ,मरकर जी ने से,
ख़्वाबों की दुनियां ,कितनी अच्छी है।
मौत नहीं जहाँ दूर तलक ,
ज़िंदगी इनमें बस मिलती है।
खोया हूँ ख़्वाबों की ख़ातिर, मुझे नींद से न जगाना तुम ।
आना हो जो मुझसे मिलने, मेरे ख़्वाबों में आ जाना तुम।

आँख आँख नीर

अब तो आँख आँख नीर बहाती है ।
ग़म के बादल से छाई अँधियारी है ।

टूट रहीं है सीमा पर डोरे जीवन की ,
दुश्मन की गोली चुपके से आ जाती है ।

राख हुए सपने यौवन मन के ,
डिग्री को दीमक खा जाती है ।

अहं भाव के मकड़ जाल में ,
मंदिर मस्ज़िद उलझीं बेचारी है ।

लिपट रहे अँधियारे उजियारों से ,
अपनो की अपनो से सौदेदारी है ।

गहन निशा हर दिन कुंठाओं की ,
दिनकर को भी ढँक जाती है ।

राह नही सूझे कोई अब तो ,
राहें राहों में उलझी जाती हैं ।

तारा भी न चमके भुंसारे का ,
निशा गहन की ऐसी सरदारी है ।

अब तो आँख आँख ...

कड़े फैसले

पठानकोट हमले के बाद लिखी रचना (गुरुवार, 7 जनवरी 2016)

आज कड़े फैसले लेने होंगे,
कुछ अनचाहे निर्णय लेने होंगे।

करते जो छद्म वार ,
बार बार हम पर ।
मांद में घुस कर ,
वो भेड़िये खदेड़ने होंगे ।
अब न समझो ,न समझाओ।
अब तो ,आर पार हो जाओ।
जाकर दुश्मन के द्वार ,
ईंट से ईंट बजा आओ।
आज कड़े फैसले ....

कितना खोयें अब हम ,
अपनी माँ के लालों को।
कितना पोछें और सिंदूर हम,
अपनी बहनों के भालों से।
सूनी आँखे , सूना बचपन,
ढूंढ रही पापा आएंगे कल।
देखो उस अबोध बच्ची को,
कांधा देती शहीद पिता की अर्थी को।
आज कड़े फैसले....

यूं चाय पान से कोई माना होता ,
तब धनुष राम ने न ताना होता ।
तब चक्र कृष्ण ने न भांजा होता ,
बन जाओ राम कृष्ण तुम भी ।
देर नही चेतो जागो अब भी ,
उठा धनुष चढ़ा प्रत्यंचा,
दे टंकार कहो ,
दुश्मन तेरी अब खैर नहीं ।
आज कड़े फैसले लेने होंगे ..

सृजन की समीक्षा

1.

अन्तरा शब्द शक्ति परिवार के, सृजक सृजन समीक्षा विशेषांक में स्वागत है आपका आ विवेक दुबे जी संक्षिप्त परिचय, प्रकाशन, आत्मकथ्य बहुत प्रभावशाली है। सहज, सरल हृदय से निकले भाव और अभिव्यक्ति आपकी सारी रचनाओं में दिखाई देती है।

साहित्यकार पिता के पुत्र होने के कारण , सृजन की प्रतिभा स्वाभाविक रूप से जुड़ी हुई है।

माँ, के आँचल में पूरी सृष्टि समाई है, सुन्दर रचना।

पिता, सच कहा, पिता के वृहद हृदय से कभी ना नहीं निकलता, ईश्वर का वरदान हैं माता और पिता ।

चेहरे, सही कहा चेहरे ही बयां करते हैं इंसान के हुनर को, इस हुनर में मैं स्वयं को बहुत कमजोर मानती हूँ, अपने भावों को नहीं छुपा पाती। लेकिन लोग बड़े माहिर होते हैं। वाह बहुत खूब।

एकाकी इस जीवन में, बेहतरीन अभिव्यक्ति।

ख्वाबों की खातिर, लाजवाब सृजन।

आँख का नीर, बहुत ही सुन्दर रचना।

कड़े फैसले, ओजस्वी रचना।

सभी रचनाएँ बेहद संवेदनशील भावनाओं को दर्शाती हैं, कहीं कहीं वर्तनी दोष या मात्रा की त्रुटियाँ हैं । अभी पिताजी के ऑपरेशन के कारण हॉस्पिपल में हूँ , इसलिए समीक्षा संक्षिप्त ही की है। आपकी रचनाएँ पटल पर उपस्थित होती हैं, उत्साह बढ़ाती हैं। शुभकामनाओं सहित- पिंकी परुथी "अनामिका"

2.

विवेक भाई ,

अंतरा के आज के सृजक रचनाकार के रूप में आपका स्वागत । **बधाई**।

जिस तरह दवा मानव शरीर के विकार हटाती है उसी तरह सकारात्मक लेखन भी समाज के विकार हटाता है।

आप दोनों कार्य एक साथ कर रहे हैं । सराहनीय है यह।

त्वरित लेखन मन की सहज अभिव्यक्ति होती है , जो निकलता है वह

अधिकतर कल्पना से परे होता है।
आत्मकथ्य प्रभावी है और रचनाएँ भी लेकिन पर्याप्त सुधार अपेक्षित है। टाइप त्रुटियों पर विशेष ध्यान दीजिएगा। सभी रचनाएँ पसन्द आईं।
पुनः **बधाई**।

देवेंद्र सोनी इटारसी

3.

आ. विवेक दुबे "निश्चल" जी आपको हार्दिक **बधाई** एवं शुभकामनाएं।
आज इस सप्ताह सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषंक में आपका आत्मकत्थ पढ़ा जो सहज ही आपके सरल हृदय एवं सौम्य स्वभाव को उजागर करता है। आपकी रचनाएँ उत्तम भावाभिव्यक्ति में उत्तम रही है। जो मन को छू कर एक संदेश दे रही है।
1- माँ कविता में आपने माँ की महता को सजीव एवं जीवंत कर दिया। सच में माँ जब अपनी औलाद के लिए ही बनी है उसके दिन उसकी राते सब कुछ अपनी संतान पर न्यौछावर है। उत्तम भावाभिव्यक्ति।
2- पिता,..जहां आपने माँ महत्ता पर लिखा वहीं पिता की विशालता को भी इस रचना में दर्शाया है
आप की ही पंक्तियों में,होंठो की मुस्कान माँग लो ।
जीवन का संग्राम माँग लो ।।,सारा पौरुष श्रृंगार माँग लो ।
साँसों से तुम प्राण माँग लो ।।
सब कुछ न्यौछावर करने को तत्पर रहते है पिता भी उत्तम पंक्तियां।
3-चेहरे
चेहरे ही बयां करते है, इंसान के हुनर को ।
नजरें ही पढ़ा करतीं हैं ,हर एक नज़र को ।
सच कहा आपने चेहरे बया करते है कि इंसान के भीतर क्या है। उसके भाव से ही हम समझ जाते है। शब्द तो मात्र दिखावा रहता है। उत्तम शब्द संयोजन।
4- एकाकी इस जीवन मे
इस रचना में आपने एकाकी पन में मानव मन की दशा दिशा का सटीक चित्रण किया है। यथा
नींद नही आती अब,पलकों पे रात बिताने को ।

5-ख़्वाबों की खातिर
ख्वाबों की दुनिया का एहसास कराती रचना।
6-आँख आँख नीर
टूटते सपने बुझते अरमानों की दास्तान उत्तम।
7-कड़े फैसले
अंत मे आपने पठानकोट हमले पर अपना आक्रोश व्यक्त किया। जो सहज की आपने देशप्रेम को उजागर करता है।
आपकी सभी रचनाएँ सन्देश परक है जिसमे आपने कोई न कोई सन्देश देने का उत्तम प्रयास किया है। आपकी कलम यूँ सदैव चलती रहे। आपके भावो, आपकी अभिव्यक्ति को नमन करते हूए आपकी लेखनी को नमन । पुनः आपको मंगल कामनाएं प्रेषित करते हूए हार्दिक **बधाई** एवं शुभकामनाएं।

कैलाश मंडलोई 'कदंब' खरगोन मध्यप्रदेश

4.
उत्सवमूर्ति आदरणीय विवेक दुबे जी का पटल पर **अभिनंदन** हैं...
विरासत में मिला काव्य, और उस पर त्वरित टिप्पणीयाँ और सरल काव्य धारा प्रभावी आत्मकथ्य बनाती है|
आपकी रचनाएं,
माँ, पिता दोनों ही ऐसे विषय हैं जिस पर कोई टिप्पणी नहीं की जा सकती, रचनाएं बेहतर हैं |
चेहरे
बेहतर रचना, सरल भाव
एकाकी इस जीवन में
वर्तनी की बहूत अशुद्धियाँ है, जिससे मूल भाव बिछड़ रहें हैं |
ख़्वाबों की खातिर
सुन्दर भाव
आँख आँख नीर
उम्दा विषय, पर प्रभावी रचना नहीं... इससे ज्यादा बेहतर भाव हो सकता था |
कड़े फैसले

बेहतरीन
कुल मिलाकर रचनाओं का विषय चयन बेहतरीन हैं, परन्तु कुछ एक जगह को छोड़ कर रचनाओं में भाव टूट रहें हैं| उन्हें ज्यादा अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है| और वर्तनीदोष का काला तिलक कुछ ज़्यादा बड़ा हो गया है, उसे छोटा किया जा सकता हैं|
आशा है आप अन्यथा नहीं लेंगे |
क्षमा सहित...

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल', हिन्दीग्राम, इंदौर

5.

आज की केन्द्रीय रचनाकार आदरणीय विवेक दुबे जी का
हार्दिक **अभिनंदन**,..
आपका परिचय और आत्मकथ्य पढा। बेहद प्रभावशाली व्यक्तित्व है आपका। साहित्य तो आपको विरासत में मिला।
आपकी सभी रचनाएं सीधे मन को छूती है विशेष रूप से
मां-आपके विचारों को दर्शाती है।
पिता- अति सुन्दर
चेहरे-सच कहा....हर भाव दर्शाता
एकाकी इस जीवन में- लाजवाब रचना
ख्वाबों की खातिर- बेहतरीन
आंख आंख नीर- सुंदर लिखा
कड़े फैसले- बिल्कुल ठीक कहा
सभी रचनाएं भावपूर्ण
सभी रचनाओं में आपने अपनी संवेदनाओं को बहुत खूबसूरती के साथ उकेरा है।
आपकी रचनाएं पढना सुखद एहसास है | आपको बहुत शुभकामनाएं । आप की लेखनी अनवरत चलती रहे। मां सरस्वती की कृपा सदैव बनी रहे,...

चंचल पाहुजा.दिल्ली

6.

आज के केंद्रीय रचनाकार विवेक दुबे जी का अंतरा में हार्दिक **अभिनंदन**, परिचय मैं रायसेन पढ़कर बचपन याद आ गया, मेरा ननिहाल है वहां । श्री परमानंद जी दुबे परिवार से हमारे अच्छे संबंध भी रहे थे, (शायद आप जानते हो) प्रभावी आत्मकथ्य दवा व्यापार के साथ हिंदी मां की सेवा में संलग्न होना, यह बहुत अच्छी बात है। समय समय पर आप की रचनाएं अंतरा में पढ़ने को मिलती हैं विरासत में मिली यह कला की बेल दिनो दिन निखरती जाए चढ़ती जाए यही कामना है

माता पिता पर लिखी गई दोनों रचनाएं बहुत खूबसूरत

एकाकी जीवन

अलसाए इन भुनसारों को लोकभाषा के विलुप्त होते शब्दों का प्रयोग बहुत सुंदर

ख्वाबों की खातिर

अच्छी रचना लेकिन टंकण त्रुटि के कारण प्रभाव कम हो जाता है जी ते जी -जीते जी

आंख आंख नीर

बेहतरीन भाव

पठानकोट हमले पर लिखी गई

कड़े फैसले

प्रत्येक सच्चे भारतीय के मन का आक्रोश!! परंतु यह रचना और भी प्रभाव छोड़ सकती थी।

रचनाएं टाइप करने के बाद दो बार अवश्य पढ़ें ,और अधिक प्रभावशाली होंगी,...आप को उज्जवल भविष्य की अनेक-अनेक शुभकामनाएं

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com